नेतरहाट जीवन–दर्शन

त्रिनाथ मिश्र (1954–60)

नेतरहाट से संबद्ध व्यक्तियों के लिए यह एक भौगोलिक स्थान अथवा पाठशाला नहीं रह गया है। यह एक विशिष्ट जीवन–दर्शन, जीवन–शैली, कतिपय मूलभूत मान्यताओं एवं जीवन–मूल्यों का पर्याय बन गया है। नेतरहाटीय विचार–धारा विद्यालय के शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं पूर्ववर्त्ती छात्रों की जीवन–पद्धति एवं समाज, राष्ट्र तथा विश्व के प्रति उनके दृष्टिकोण की निर्मिति का मुख्य निर्णायक तत्व बन गई है। यही इस संस्था की सार्थकता एवं प्रासंगिकता है। यही वह डोरी है जो नेतरहाट–परिवार के सभी सदस्यों को एक माला में पिरोए रहती है। इस परिवार के सभी सदस्य प्रगट अथवा प्रच्छन्न रूप से इस विचार–धारा से अनुप्रेरित एवं अनुप्रेणित होते हैं।

नेतरहाट की स्थापना के मूल में दो प्रमुख उद्देश्य थे – उत्तमता का परिपोषण एवं उसकी परिवृद्धि एवं भारतीय सांस्कृतिक धरोहर को अक्षुण्ण रखते हुए प्रज्ञामूलक वैज्ञानिक दृष्टिकोण का सम्वर्द्धन। दोनों उद्देश्यों का उत्स था शाश्वत भारतीय जीवन–दर्शन।

जिज्ञासा भारतीय दर्शन का धरातल रही है। जिज्ञासा द्वारा प्राप्त ज्ञान को भारतीय मनीषियों ने शीर्षस्थ स्थान दिया है। तर्क के निष्कर्ष पर जो सिद्धान्त खरा उतरे वही विश्वसनीय एवं अनुकरणीय है, यह भारतीय दर्शन का निर्देश है। ऋषि–महर्षि, गुरु यहाँ तक कि स्वयं भगवदवतार भी जिज्ञासु को प्रश्न पूछने से कभी मना नहीं करते हैं, उलटे बारम्बार उससे पूछते हैं कि क्या उसके मन में या चित्त में कोई प्रश्न या शंका शेष तो नहीं रह गई है। अन्य सम्प्रदायों के प्रतिपादकों की तरह वे यह आदेश नहीं देते कि इस सिद्धान्त अथवा वचन को मानो ही। श्रुति, स्मृति, शास्त्र एवं पुराण बारंबार जिज्ञासा पर बल देते हैं। ब्रह्म–सूत्र तो इसी बिन्दु से प्रारंभ होता है, 'अघातो ब्रह्म जिज्ञासा'। गीता में वासुदेव अर्जुन के प्रश्नों का उत्तर देते हुए कभी नहीं थकते। भारत में अपने मत–प्रतिपादन के लिए न तो किसी सुकरात को विष–पान करना पड़ा और न ही किसी ईसा को सलीब पर टंगना पड़ा। भारतीय चिंतन की इस विचार–पीठिका को सर्वाधिक स्पष्ट रूप से गौतम बुद्ध ने अभिव्यक्त किया है। अपने अनुयायिओं को सावधान करते हुए बुद्ध कहते हैं: ''परीक्ष्य भिक्षवो ग्राह्यम् मदवचनाः न तु गौरवात्।'' मेरे गौरव से अभिभूत होकर मेरे वचनों को ग्रहण न करो; पहले इनकी स्वयम् परीक्षा करो; यदि परीक्षा में मेरे उपदेश खरे उतरें तभी उन्हें स्वीकार करो।'

नेतरहाट की शिक्षण एवं चिन्तन–प्रणाली ने इसी तत्व, जिज्ञासा, को अपने कार्यक्रम का आधार बनाया। शिक्षा का रूप एवं पद्धति आदेशात्मक न होकर अभिप्ररक एवं दिग्दर्शक रही। शिक्षकों का सतत् प्रयास रहा कि विद्यार्थी का मानस–पटल मात्र पाठ्य–पुस्तकों अथवा पाठ्यक्रम तक ही परिसीमित न रहे। वे मौलिक चिन्तन, मनन तथा विषय–वस्तु से संलग्न सभी तत्वों तथा तथ्यों के अनुशीलनार्थ छात्रों को प्रेरित करते रहे। नई सोच, नई समझ, नई दृष्टि पैदा करना उनका ध्येय था।

सत्तर के दशक में शिक्षाविदों ने 'इंटिग्रेटेड लर्निंग' का मुद्दा उठाया। नेतरहाट में 'सर्वाङ्गीन–विकास के सिद्धान्त पर प्रारंभ से ही इस पर अमल रहा। इसी कारण भौतिक–विज्ञान एवं तकनीकी विषयों के विद्यार्थी भी

काव्य, संगीत एवं ललित कलाओं का आनन्द लेने की क्षमता प्राप्त कर सके।

धैर्य, दम एवं संतोष भारतीय जीवन के अन्यतम मूल्य रहे हैं। विषम परिस्थितियों में संयम एवं संतुलन रखने की बड़ी महत्ता मानी गई है। भारतीय काव्य में 'धीरादात्त' नायक ही सर्वश्रेष्ठ पात्र माना गया है। मर्यादा-पुरुषोत्तम श्री राम इस कोटि के नायकों का दृष्टान्त माने गए हैं क्योंकि परिस्थितियों का वैपरीत्य एवं वैषम्य कभी उन्हें विचलित नहीं कर सका। श्री जीवननाथ दर बहुधा रामचरितमानस के अयोध्या-काण्ड के मंगलाचरण का एक श्लोक उद्धृत किया करते थे:" प्रसन्नवां या न गताऽऽ भिषेकत: तथा न मम्लौ वनवास-दु:खत:; मुखाम्बुज श्री रघुनन्दनस्य में सदास्तु सा मञ्जुल-मंगलप्रदा।" राज्याभिषेक का समाचार सुनकर न तो प्रसन्नता की लहर दौड़ी और न वनवास की आज्ञा सुनकर दु:ख का रेखा; ऐसे श्री रघुनंदन का मुखकमल सदैव मुझे मंजुलता एवं मांगल्य प्रदान करें।'

'यदि मेरा विद्यार्थी राजभवन और किसान की झोपड़ी में समभाव से रह सके तो मैं अपने को कृतार्थ मानूंगा', श्री दर की उक्ति थी। ऋषितुल्य प्रधानजी की यह अभीप्सित अभिलाषा उनके शिष्यों ने न्यूनाधिक रूप से पूर्ण की है। देश-विदेश के विभिन्न भागों में विषम एवं कठिन परिस्थितियों में उन्होंने अपने कर्त्तव्यों का निर्वाह अपेक्षित रूप से किया है। यूरोपीय एवं अमेरिकी परिवेश में भी वे उसी सहजता एवं सरलता से रह रहे हैं जैसे भारत में रहते थे। न तो वहाँ की जीवन-शैली से सामञ्जस्य स्थापित करने में उन्हें कोई कठिनाई आई और न ही अपने भारतीय अस्मिता को अक्षुण्ण रखने में।

स्वावलम्बन एवं शारीतिक श्रम की महत्ता नेतरहाट जीवन-दर्शन के मूल तत्व हैं। आश्रम-परिसर की सफाई, भोजन-उपकरणों की सफाई एवं एतद्दृश अन्य दायित्व विद्यार्थियों को इसलिए नहीं सौंपे गए थे कि सरकार को आर्थिक बचत हो। इन कार्यों के लिए कतिपय परिचारकों की नियुक्ति विशेष व्यय-भार का कारण नहीं बनती। यह व्यवस्था की गई थी विद्यार्थियों को स्वावलम्बन, शारीरिक श्रम की महत्ता एवं रूढ़िवादी संकीर्ण मनोवृत्ति से उभरने का पाठ पढ़ाने के लिए। यह हमारे समाज की एक बड़ी विडम्बना रही है कि शारीरितक श्रम करने वालों को बौद्धिक एवं वैचारिक श्रम करनेवालों को से कमतर समझा गया है। शौच-सफाई वालों के प्रति उपेक्षा का भाव रहा है। जो गंदगी फैलाए वह बड़ा, और जो उसे साफ करे वह छोटा: यह विचित्र एवं सर्वथा अनुचित प्रवृत्ति दुर्भाग्यवश भारतीय समाज में स्थापित हो गई है। अभी तक इसका पूर्ण निवारण नहीं हो पाया है। शौचालयों की सफाई, झाड़ू लगाने का काम, सिर्फ अपना ही नहीं बल्कि बारी-बारी सभी के जूठे बर्तनों को मांजने का काम का दिया जाना इसी दुष्प्रवृत्ति के निराकरण की सफल चेष्टा थी।

इस प्रशिक्षण की उपादेयता उजागर हुई नेतरहाट छोड़ने के बाद नेतरहाट के अधिकांशत: विद्यार्थी मध्यवित्त एवं निम्नमध्यवित्त परिवारों के थे। अध्ययन के परवर्त्ती वर्षो में उन्हें विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। सामान्य सुविधाओं की उपलब्धि भी उनके लिए सहज न थी। इन परिस्थितियों में स्वावलंबन एवं स्वहस्त से विभिन्न कार्यो के संपादन का यह अनुभव उनके काम आया। उन्हें किसी कार्य के लिए दूसरों का मुँह जोहना न पड़ा। साधारण गृह-कार्य भी उनके लिए चिन्ता एवं अवसाद के स्थान पर आनन्दानुभूति का साधन बन गया।

साम्प्रदायिक एवं जातिगत रूढ़िवादिता एवं संकीर्णता से परे सर्व-मानव-समभाव का आचरण नेतरहाट जीवन-दर्शन की प्रमुख विशिष्टता रही है। बिहार का समाज जातिगत संकीर्णता एवं वैमनस्यता से बड़ा प्रभावित रहा है। इस सामाजिक महामारी के कारण बिहार का भौतिक, मानसिक एवं सांस्कृतिक विकास अवरुद्ध रहा है। नेतरहाट के शिक्षकों एवं कार्मिकों को इस बात का श्रेय देना होगा कि उन्होंने नेतरहाट परिवार को इस रोग के कीटाणुओं से असम्पृक्त रखा। नेतरहाट-निवास तथा परवर्त्ती जीवनावधि में भी शायद ही किसी ने जाति, मूल, गोत्र आदि विषयों की चर्चा में अपना समय गँवाया होगा। इसी कारण अपने संतानों के विवाह-संबंध के निर्धारण के अवसर पर भी -- इस अवसर पर इन बिन्दुओं पर सर्वाधिक ध्यान सामान्यजन दिया करते हैं, नेतरहाट-परिवार के सदस्य इन तत्वों पर जोर नहीं दिया करते हैं। उनके लिए व्यक्तित्व, शील, आचरण एवं पात्रता ही मनुष्य के मूल्यांकन के आधार-तत्व हैं।

भारतीय दर्शन के अनुसार आनंद ही सृष्टि का ध्येय है। भौतिक उपादानों से अदभूत सुखानुभूति इस आनंद का पर्याय नहीं है। यह आनंद उस अद्वैतुक अनुभूति की संज्ञा है जो सूर्योदय की अरुणिमा की छटा देखकर द्रष्टा के हृदय में उपजती है। नेतरहाट की नैसर्गिक सुषमा एवं वहाँ की सरल-सहज जीवन-शैली ने अप्रकट रूप से सभी नेतरहाट-परिवार के सदस्यों को इस अद्वैतुक आनन्द को अनुभूत करने की क्षमता दी। गुरुओं ने भी सदैव अभिप्रेरित किया कि छात्र प्रकृति से जुड़े रह; इसे मात्र उपभोग का साधन न समझें वरन् संबर्द्धन हेतु जगन्नियन्यता द्वारा दत्त धाती समझें। ''ईशावास्यमिदं सर्व यत्किञ्च जगत्यांजगत्। तेन व्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृद्धः कस्यस्विनम्''; संसार में जो कुछ है वह ईश्वर का है; आवश्यकतानुसार उनका व्यवहार करो, अकारण लोभवश संग्रहन करो: यह पाठ पूर्णत: नेतरहाट में सभी को हृदयङ्गम करा दिया गया।

छः वर्षो तक प्रदूषण-रहित नैसर्गिक सौंदर्य से परिपूर्ण पर्यावरण में निवास करने के कारण प्रकृति-प्रेम तथा पर्यावरण के साथ सामञ्जस्य-पूर्ण जीवन-पद्धति का अङ्गीकरण एक नेतरहाटी के लिए स्वाभाविक था। समीर के झोंके में हिलती वृक्ष-शाखएँ, पुष्पित लता-गुल्म, यहाँ तक की घास की हरीतिमा और उनमें विकसित छोटे-छोटे फूल उसके लिए अद्वैतुक आनन्द का स्रोत बन गए। नेतरहाटी इस बात को सम्यक् रूप से जानता है कि आनन्द का उत्स उसका हृदय है, भौतिक उपादान नहीं। पारिवारिक एवं सामुदायिक जीवन में सौहार्द एवं संतोष के साथ अपने दायित्वों का निर्वाह करने में इस पाठ ने उसकी बड़ी सहायता की है। इस संज्ञान के कारण नेतरहाटियों का पारिवारिक जीवन सुदृढ़ एवं सुखमय रहा है।

स्वदेश एवं स्वदेशी वस्तुओं के प्रति प्रगाढ़ अनुराग नेतरहाट की मान्यता रही है। इस प्रवृत्ति को प्रचलित एवं प्रवर्द्धित करने के लिए नेतरहाट के प्रथम प्राचार्य श्री चार्ल्स नेपियर साधुवाद के पात्र हैं। वे अंग्रेज थे। सामान्यत: उनका आग्रह अंग्रेजी रहन-सहन की ओर होना चाहिए था किन्तु वे एक स्वावलंबी एवं स्वाभिमानी भारत की रचना के लिए समर्पित थे। इस कारण उन्होंने छात्रों के परिधान के लिए खादी के कपड़ों का चयन किया। खान-पान एवं रहन-सहन की शैली भी शुद्ध भारतीय स्वरूप की रखी। हिन्दी को शिक्षा का माध्यम बनाया। राष्ट्रीय उत्सवों, पर्वो एवं रीतियों को गौरवपूर्ण स्थान दिया। सम्मेलन के समूह-गीतों के लिए वे गीत चुने गए जो राष्ट्र-प्रेम, सद्भाव एवं सदाचरण की भावना से ओत-प्रोत थे। यद्यपि औपचारिक रूप से धार्मिक

शिक्षा का प्रविधान नेतरहाट के पाठ्य-क्रम में नहीं था किन्तु इन माध्यमों से परोक्ष रूप से सभी धर्मो की मौलिक मान्यताओं -- सत्य, अहिंसा, सदाचार, शील, परोपकार एवं सहिष्णुता, की प्रतिष्ठा की गई।

नेतरहाटीय जीवन-दर्शन के इन मूल्यों एवं मान्यताओं का बारंबार स्मरण किया जाना आवश्यक है ताकि किसी कारण से उपेक्षित या विस्मृत न हो जाएँ। ये मूल्य ही नेतरहाट की पहचान हैं और साथ ही साथ इसकी उपलब्धि भी। यदि इनका अवमूल्यन हुआ तो नेतरहाट एवं अन्य पढ़ाई की दूकानों में कोई अंतर नहीं रह जाएगा।

विगत तीस वर्षो में हुए राजनैतिक एवं सामाजिक परिवर्त्तनों एवं विसंगतियों का दुष्प्रभाव नेतरहाट को झेलना पड़ा है। नीति-निर्णायिक के पद पर आसीन कुछ राजनेताओं के मन में यह विभ्रम बहुत दिनों तक रहा कि अन्य पब्लिक स्कूलों की तरह नेतरहाट भी साधन-सम्पन्न वर्ग के विद्यार्थियों का हित-साधन करने वाली संस्था है। इस कारण उन्होंने इसकी घोर उपेक्षा की। वे भूल गए कि निर्धन एवं विपन्न किन्तु प्रतिभापूर्ण बालकों को जीवन में समुचित स्थान प्राप्त करने में इस विद्यालय ने कितनी सहायता की है। बिहार सरकार की कोई अन्य योजना अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में इतनी सफल नहीं रही है। 'चरवाहा-विद्यालय', 'पहलवान-विद्यालय' सदृश्य अव्यावहारिक एवं आधारहीन योजनाओं पर वे सार्वजनिक संपत्ति लुटाते रहे। वे भूल गए कि नेतरहाट में श्रम को कितनी महत्ता दी गई है। प्राचीन गुरुकुलों की तरह जीवन के हर कार्य - झाड़ू लगाने और बर्तन मांजने से लेकर विज्ञान के प्रयोगों तक, की शिखा यहाँ दी जाती है। इस अनदेखी के कारण विद्यालय-व्यवस्था में बड़ी अस्थिरता रही।

बिहार-झारखंड विभाजन के बाद नेतरहाट विद्यालय के स्वरूप में बड़ा बदलाव आया। आशा के विपरीत इसका कार्य-क्षेत्र संकुचित हो गया। यह आशा की जाती थी कि भविष्य में नेतरहाट भारत के सभी क्षेत्रों के विद्यार्थियों को उच्चस्तरीय शिक्षा प्राप्ति का अवसर देगा। इसके स्थान पर अब यह मात्रा झारखंड की सीमाओं तक ही परिसीमित रह गया है। शिक्षकों का चयन भी इन्हीं सीमाओं में परिबद्ध हो गया है। कल-कारखानों के निर्माण एवं संचालन के लिए तो देश-विदेश से विशेषज्ञों का आयात करने में किसी को आपत्ति नहीं है किन्तु राष्ट्र के भावी कर्णधारों की निर्मिति हेतु विद्वान एवं समर्थ शिक्षकों के चयन के ऊपर उपर्युक्त प्रतिबंध ा लागू कर दिया गया है। इसे क्या कहा जाए- दैव-विधान अथवा नीति निर्णायकों की मतिहीनता। वे नेतरहाट के शिक्षकों के पदों को मात्र स्थानीय व्यक्तियों के लिए रोजगार के अवसर मानने की भूल कर बैठे हैं।

इन परिस्थितियों में नेतरहाट के इन आधारभूत मूल्यों एवं मान्यताओं का अनुस्मरण और अधिक प्रासङ्गिक एवं महत्त्वपूर्ण हो जाता है। वर्त्तमान शिक्षक-वृन्द, समकालीन एवं पूर्ववर्त्ती छात्र-समुदाय एवं नेतरहाट से जुड़े हुए सभी व्यक्तियों को इन मूल्यों को सतत् दृष्टि में रखना होगा ताकि राष्ट्र-निर्माण में नेतरहाट का योगदान पूर्वत: होता रहे।